ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

कविवर सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति के विविध रूप

Various Forms of Nature in The Works of Poet Sumitranandan Pant

Paper Submission: 05/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 26/06/2021

गुरमीत सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान, भारत

हरकेश बैरवा
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रकृति शब्द की उत्पति 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय के योग से मानी है, जिसका अर्थ स्वभाव, बनावट, आकार, उद्गम स्थल, नमूना आदि है। प्रकृति ही परब्रह्म का मूर्तिमान् संकल्प है, जिसके कारण सृष्टि की उत्पति होती है। भारतीय चिन्तन में प्रकृति संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है जितना की यहाँ मानव का अस्तित्व रहा, किन्तु उसका स्वरूप वर्तमान समय से नितान्त भिन्न था, यही कारण है कि वर्तमान में प्रकृति असंतुलन एक विकट समस्या बनी हुई है। अतः इससे निजात पाने के लिए हमें 'प्रकृतिः रक्षति रक्षिता' को ध्यान में रखना होगा।

सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति का बहुत आत्मीय, गहरा और व्यापक चित्रण मिलता है जो हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। शब्द संगीत, चित्रात्मकता एवं व्यंजना प्रधान अर्थ देने की कविताओं में अद्भुत क्षमता रही, जिससे उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है क्योंकि वे रचनाओं में कोमलकान्त पदावली और स्वच्छन्दतावादी रुचि रखते थे। इन पंक्तियों में प्रकृति का सुकोमल स्वरूप कवि पंत ने चाँदनी रूपी नारी में देखा है–

नीले नभ के शतदल पर वह बैठी शारद–हंसिनी,
मृदु करतल पर शशि मुख धर निरब अनिमिय एकाकिनी।

The origin of the word Prakriti is believed to be from the combination of nature, texture, shape, place of origin, specimen etc. Nature is the embodied will of the Supreme Brahman, due to which the creation takes place.

In Indian thought, the concept of conservation of nature is as ancient as the existence of human beings here, but its form was very different from the present time, that is why nature imbalance remains a formidable problem at present. Therefore, to get rid of this, we have to keep in mind 'Prakriti: Rakshati Rakshita'. A very soulful, deep and comprehensive depiction of nature is found in the works of Sumitranandan Pant, which is an invaluable treasure of Hindi literature. Poems had a wonderful ability to give meaning to music, pictography and euphemism, due to which he is called 'the fine poet of nature' because he was interested in soft-knotted phraseology and romanticism in compositions.

मुख्य शब्द :प्रकृति, स्वच्छंद, संध्या, सुषमा, सद्यःस्फूर्त, सुकोमल, भावप्रवण, मानवीकरण, उद्दीपन,स्निग्ध।

Nature, Free-Spirited, Evening, Euphoric, Virtuous, Soft, Passionate, Humanizing, Excitable, Aliphatic.

प्रस्तावना

सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्यधारा के सर्वथा अनुपम और विशिष्ट कवि हैं। उनको छायावाद का चौथा स्तंभ भी माना जाता है। दूसरे शब्दों में उनका छायावादी काव्यधारा को संवारने में अद्भुत योगदान है। छायावादी कविता की विशेषता रही है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता, इसके लिए इस धारा के कवियों ने अपनी आत्मनिर्भर अभिव्यक्ति के लिए स्वच्छंद कल्पना और प्रकृति का आश्रय लिया है। पंत की रचनाओं में प्रकृति के प्रति अपार प्रेम और कल्पना की ऊंची उड़ान है। यह प्रकृति प्रेम स्वयं के परिवेश से ही प्राप्त हुआ। आपने इस विषय में लिखा है– ''कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है, कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है मैं घंटो

एकांत में बैठा प्रकृति दृश्य को एकटक देखा करता था।'' उनका मानना है कि जैसे एक दीपक दूसरे दीपक को जलाता है उसी प्रकार द्विवेदीयुग के कवियों की कृतियों ने उनके ह्रदय को अपने सौंदर्य से स्पर्श किया और उसमें एक प्रेरणा की शिखा जगा दी।

शोध का उद्देश्य

सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को कोमलकान्त पदावली के परम्परागत कलेवर का कल्पनारूपी एक ऐसा परिधान दिया है जो मानव मन की तरह ही गहन, गूढ़, जटिल व सूक्ष्म है और उसका सौन्दर्य सुकुमार। स्वयं ने काव्य में कल्पना के महत्त्व को बताते हुए लिखा है– ''मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हूँ, मेरी कल्पना को जिन–जिन विचारधाराओं से प्रेरणा मिली है, उन सब का समीकरण करने की मैंने चेष्टा की है। मेरा विचार है कि 'वीणा' से लेकर 'ग्राम्या' तक अपनी सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को ही वाणी दी है।''

प्रकृति के विविध रूप

सुमित्रानंदन को प्रकृति सौंदर्य के अनेक सद्यःस्फूर्त उपकरणों ने अपनी ओर आकर्षित किया है। इसी कारण प्रकृति की मनोरम मूर्ति की कल्पना को समय–समय अपने काव्य मंदिर में प्रतिष्ठित किया है। प्रकृ ति चित्रण की प्रेरणा स्रोत उत्तर भारत जनपद की नगरी कसौनी रही है, जिसका मनोरम चित्र कवि पंत ने इन शब्दों में खींचा है–

आरोही हिमगिरी चरणों पर
रहा ग्राम वह मरकत मणिकण
श्रद्धानत–आरोहण के प्रति
मुग्ध प्रकृति का आत्म–समर्पण
सांझ–प्रात स्वर्णिम शिखरों से
द्वाभायें बरसाती वैभव
ध्यानमग्न निःस्वर निसर्ग निज
दिव्य रुप का करता अनुभव।

प्रकृति का मानवीकरण रूप

प्रकृति में चेतन सत्ता का आरोपण ही मानवीकरण कहलाता है। छायावादी काव्य में प्रकृति को एक चेतन सत्ता के रूप में ही देखा जाता है, जडरूप में नहीं। 'संध्या' कविता में कवि ने संध्या को नवयुवती के रूप में चित्रित किया है– कहो ! तुम रूपसी कौन ?

व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया–छवि में आप,
सुनहला फैला केश–कलाप
मधुर, मंथर ? मृदु मौन ![1]

इन पंक्तियों में एक रूपसी युवती को मौन मंथर गति से धरा पर अवतरण करवाकर कवि ने संध्या का मानवीकरण रूप किया है।

'नौका विहार' कविता में पंत ने शान्त, स्निग्ध, उज्ज्वल रहने वाली, शयन करने के समकक्ष श्रान्त, क्लान्त, निश्चल दिखाई देने वाली, चन्द्र मुख आभा वाली ग्रीष्मकालीन गंगा का एक तापस बाला के रूप में मनोरम चित्रण किया है– शान्त, स्निग्ध, ज्योत्स्ना उज्ज्वल !

अपलक अनन्त, नीरव भूतल !
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल !
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि मुख से दीपित मृदु
करतल,
लहरें उर पर कोमल कुंतल ![2]

सुमित्रानंदन पंत की प्रगतिशील दौर की कविताओं में कृषकवर्ग का दुःख दर्द छिपा है, उनमें गाँवों के लोगों की विपन्नता, गरीबी के दृश्य का सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है। 'ग्राम श्री' कविता में गाँवों की प्राकृतिक सुषमा और कोमलकान्त खेती की हरियाली का मनोहारी दृश्य उपस्थित किया है –

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटी जिससे रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली!
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक।
श्यामल भूतल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक![3]

प्रकृति का जिज्ञासा रूप

सुमित्रानंदन पंत के अलावा किसी अन्य छायावादी कवि को ऐसा प्राकृतिक परिवेश नहीं मिला था, इसलिए उन्होंने प्रकृति को निर्जीव जड़ वस्तु न मानकर एक साकार और सजीव सत्ता के रुप में उपस्थित किया है, उसका एक–एक भाग कभी–कभी मन में जिज्ञासा उत्पन्न कर देता है –

हार गई तुम प्रकृति ! रच निरुपम मानव–कृति !
निखिल रुप, रेखा, स्वर हुए निछावर,
मानव के तन, मन पर !

'प्रथम रश्मि' कविता में जिज्ञासा भाव का एक उदाहरण –

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ हे बाल विहंगिनी
पाया, तूने यह गाना ?[4]

'एक तारा' कविता में गंगा के चलायमान जल में लाल कमल के समान सूर्य के बिंब का डूबना और गंगा की लहरों पर स्वर्ण आभा का धीरे–धीरे नीलिमा में परिवर्तित होना बताता है कि यौवन अवस्था में अधरों पर लालिमा तो आ जाती है, परन्तु शिशिर ऋतु का भी भय सताता है–

गंगा के चल जल में निर्मल कुम्हला किरणों का रक्तोपल
है मूंद चुका अपने मृदु दल !
लहरों पर स्वर्ण रेखा सुंदर पड़ गई नील, ज्यों अधरों पर
अरुणाई प्रखर शिशिर से डर ![5]

कविवर पंत का वैसे तो सुकोमल और मनोरम प्रकृति के प्रति स्नेह अधिक रहा है, लेकिन उनका ह्रदय कभी–कभी कोमलता से हटकर कठोरता की ओर चला जाता था। पपीहों की पुकार, झरनों की वृहद् झर–झराहट, झींगुरों की मध्यम झंकार, अत्यधिक मदयुक्त मेघों की गम्भीर घर–घराहट, दादुरों के कर्कश–स्वर आदि दृश्यों

को 'आँसू' कविता में वर्षाकालीन रात्रि का चित्रण उपस्थित किया है–

पपीहों की वह पीन–पुकार,
निर्झरों की भारी झर्–झर्
झींगुरों की झीनी झंकार,
घनो की गुरु–गंभीर–घहर
बिंदुओं की छनती–छनकार,
दादुरों के वे दूहरे–स्वर
हृदय हरते थे विविध–प्रकार
शैल–पावस के प्रश्नोत्तर !⁶

पंत ने इन पंक्तियों में चहकती हुई चिड़ियों और उदास मन से अपने घरों की सीमाओं को नापते हुए भारी पग लौटने वाले मजदूरों की विरोधपूर्ण स्थिति के माध्यम से 'बाँसों के झुरमुट' कविता में संध्या का अत्यंत व्यंजक एवं मनोहर स्वरूप प्रस्तुत किया है –

बाँसों का झुरमुट
संध्या का झुटपुट,
हैं चहक रहीं चिड़ियाँ
टी–वी–टी–टूट्–टूट ्!
ये नाप रहे निज घर का मग
कुछ श्रमजीवी धर डगमग डग
भारी है जीवन ! भारी पग !!⁷

प्रकृति का आलंबन रूप

स्वच्छ किरणों को देखकर चन्द्रमा का धवल होने का निश्चय कर लिया जाता है और वायु में मिश्रित कमल–पराग एवं पुष्परस को मिला देखकर पास में ही विकसित कमल वन का अन्दाज कर लिया जाता है, उसी प्रकार पंत की कविता में प्रकृति चित्रण का रूप पावस–ऋतु की सूचना दे रहा है–

पावस–ऋतु थी पर्वत–प्रदेश,
पल–पल परिवर्तित प्रकृति–वेश।
गिरि का गौरव गाकर झर–झर,
मद में नस–नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों से सुंदर
झरते हैं झाग–भरे निर्झर !⁸

प्रकृति का उद्दीपन रूप

उद्दीपन रूप में प्रकृति का मानव भावनाओं को उद्दीप्त करना होता है। उस रूप में प्रकृति का वर्णन बहुत ही अधिक प्रयोग होता है विशेषतः विरह काव्य में। इस तरह प्रकृति का उपयोग अलंकारों के प्रयोग के लिए किया जाता है – मेरा पावस–ऋतु सा जीवन

मानस–सा उमड़ा अपार–मन,
गहरे, धुँधले धुले साँवले
मेघों से मेरे भरे नयन !
कभी उर में अगणित मृदु–भाव
कूँजते हैं विहगों–से हाय !
अरुण कलियों–से कोमल–घाव
कभी खुल पड़ते है असहाय !
धधकती है जलदों से ज्वाल
बन गया नीलम–व्योम प्रवाल,
आज सोने का सन्ध्याकाल
जल रहा जतुगृह–सा विकराल !⁹

प्रकृति का रहस्यात्मक रूप

प्रकृति में रहस्य भावना का आरोप करना छायावाद की विशेषता रही है। 'मौन निमंत्रण' कविता में यह भावना व्यक्त हुई है–

क्षुब्ध जल शिखरों को जब बात
सिंधु में मथकर फेनाकर
बुलबुलों का व्याकुल संसार
बना, बिथुरा देनी अज्ञात,
उठा तब लहरों से कर कौन
न जाने मुझे बुलाता मौन !¹⁰

प्रकृति का नारी रूप

अपने जीवन के आरंभिक दौर में छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत प्राकृतिक सौंदर्य से इतने अभिभूत हुए थे कि नारी सौंदर्य के आकर्षण को भी प्रकृति के सम्मुख न्यून मान लिया था। 'स्पप्न' कविता का एक चित्र यहाँ दृष्टव्य है–

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले ! तेरे बाल –जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन ?
भूल अभी से इस जग को !¹¹
सघन–द्रुमों में झूम रहा अब
निद्रा का निरव–निःश्वास
मूँद रहा घन–अन्धकार में
रह रह अलस–पलक आकाश !¹²

प्रकृति का दार्शनिक रूप

पंत की रचनाओं में प्रकृति का दार्शनिक रूप अपनी पूर्णता लिए हुए है। प्रकृति के माध्यम से गंभीर दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति की जाती है 'एक तारा' कविता की इन पंक्तियों में दार्शनिक उद्भावना दिखाई देती है –

जगमग जगमग नभ का आंगन
लग गया कुंद कलियों से धन,
वह आत्म और यह जग–दर्शन !¹³

'परिवर्तन' कविता में भी दार्शनिक विचार व्यक्त किये हैं–

आह भीषण–उद्गार !
नित्य का यह अनित्य–नर्तन
विवर्तन जग, जग व्यावर्तन,
अचिर में चिर का अन्वेषन
विश्व का तत्त्वपूर्ण–दर्शन ! ¹⁴

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति के विभिन्न रूप मिलते हैं और अपनी अलौकिक कल्पना एवं प्रतिभा के द्वारा प्रकृति की जड़ता समाप्त कर उसमें भाव प्रवणता, सजीवता, भव्यता, रमणीयता, गतिशीलता, चेतनता आदि का संचार कर दिया था तथा कथावस्तु की गतिमयता, चरित्र की अभिव्यंजकता को प्रगाढ़ता, उत्कटता एवं विस्तार रूप प्रदान किया है। कहीं उनके प्रकृति चित्र बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव को ग्रहण करते हैं तो कहीं वे सर्वथा स्वतंत्र एक रूपक चित्र की तरह उभरकर मूल भाव को चित्रित करते हैं। प्रकृति विषयक दृष्टिकोण को प्रकट

करते हुए पंत आधुनिक कवि के पर्यायलोचन में लिखते हैं– 'साधारणतया प्रकृति के सुंदररुप ही ने मुझे अधिक लुभाया है।' स्पष्ट है कि पंत को प्रकृति का सुंदर रूप ही अत्यधिक आकर्षक लगा है और उसी का काव्य में उपयोग भी किया है। प्रकृति का सुंदर रूप ग्रहण करने के कारण ही उनमें मनन एवं चिंतन की शक्ति आई और वे हिंदी साहित्य को स्वर्ण काव्य प्रदान कर सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *युगाान्त (संध्या, पृष्ठ 51)– सुमित्रानंदन पंत, इन्द्रप्रिंटिंग वर्क्स प्रकाशन, अल्मोड़ा 1936*
2. *युगाान्त– नौका विहार, पृष्ठ 67*
3. *ग्राम्या (ग्राम श्री, पृष्ठ 35) – सुमित्रानंदन पंत, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1977*
4. *रश्मिबन्ध (प्रथम रश्मि, पृष्ठ 34) – सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1969*
5. *रश्मिबन्ध– एक तारा, पृष्ठ 66*
6. *पल्लव (आँसू, पृष्ठ 21) – सुमित्रानंदन पंत, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग 1926*
7. *युगाान्त– बाँसों के झुरमुट, पृष्ठ 19*
8. *पल्लव– उच्छ्वास, पृष्ठ 07–08*
9. *पल्लव– आँसू, पृष्ठ 17–18*
10. *रश्मिबन्ध– मौन निमंत्रण, पृष्ठ 47*
11. *पल्लव– मोह, पृष्ठ 44*
12. *पल्लव– स्पप्न, पृष्ठ 57*
13. *रश्मिबन्ध– एक तारा, पृष्ठ 67*
14. *पल्लव– परिवर्तन, पृष्ठ 123*